[Shri A. K. Sen]

which has to be performed very faithfully. Again, in this work we require the help of voluntary social workers. We have some in this Parliament. Shrimati Savitri Nigam is never tired of advocating their cause. I always feel how well served they are with all our lady Members of Parliament who not only work inside Parliament but do so much work outside. When one lady Member said that our women are very backward, I protested immediately; I thought of Shrimati Savitri Nigam then, and she has, by her very brilliant Hindi speech, proved again that our women are not backward at all.

Some hon. Members rose—

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. There is no time now.

Shrimati Yashoda Reddy: One question.

Mr. Deputy-Speaker: There is no time now.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : दो करोड़ रुपये श्राप अनरजिस्टर्ड संस्था को दे रहे हैं जिस का दुरुपयोग हो रहा है । यह बात पब्लिक एकाउंट्स कमेटी ने भी कही है । उस की ओर आप का ध्यान जाना चाहिये ।

Shri A. K. Sen: If I am given time, I shall answer.

Mr. Deputy-Speaker: There is no time. Is any hon. Member pressing his cut motion?

Shri Narendra Singh Mahida: I press my cut motion No. 11.

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the demand under the Head 'Department of Social Security' be reduced by Rs. 100."

[Amenities so far provided to the people of the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other backward classes. (11)]

The motion was negatived.

All the other cut motions were then put and negatived.

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the respective sums not exceeding the amounts shown in the fourth column of the order paper, be granted to the President, *to complete* the sums necessary to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of the heads of demands entered in the second column thereof against Demands Nos. 107 and 108, relating to the Department of Social Security.

The motion was adopted.

MINISTRY OF DEFENCE

Mr. Deputy-Speaker: The House will now take up the Demands for Grants under the control of the Ministry of Defence.

DEMAND NO. 10.—MINISTRY OF DEFENCE

Mr. Deputy Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 56,90,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Ministry of Defence'."

DEMAND NO. 11.—DEFENCE SERVICES EFFECTIVE—ARMY

Mr. Deputy Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 4,88,97,75,000 be granted to the

President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Defence Services, Effective—Army'."

DEMAND No. 12.—DEFENCE SERVICES, EFFECTIVE—NAVY

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 20,92,30,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Defence Services, Effective—Navy'."

DEMAND No. 13—DEFENCE SERVICES, EFFECTIVE—AIR FORCE

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 1,31,15,00,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st Day of March, 1966, in respect of 'Defence Services, Effective—Air Force'."

DEMAND No. 14—DEFENCE SERVICES—NON-EFFECTIVE

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 17,89,27,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Defence Services-Non-effective'."

DEMAND No. 117—DEFENCE CAPITAL OUTLAY

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 1,08,79,17,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Defence Capital Outlay'."

Those Members who want to move their cut motions will please send their chits to the Table within 10 minutes.

श्री लहरी सिंह (रोहतक) : उपाध्यक्ष महोदय, बहुत लम्बे अर्से से जब कभी बाहर से हमला हुआ है तो हमेशा ही हम नाकामयाब रहे हैं । मुसलमान आये तो पानीपत की एक नहीं, दो दो और तीन तीन लड़ाइयां हुई, अहमद शाह अबदाली के साथ लड़ाई हुई और हम हमेशा ही चारों खाने चित्त गिरे हैं । अंग्रेजों के मुकाबले में हम कभी कामयाब नहीं हुए । नेफा की लड़ाई हुई और उसका जो नतीजा निकला वह न केवल मुल्क के सामने है बल्कि दुनिया के सामने है ।

तब क्या बात है कि हमारा इतना बड़ा मुल्क होते हुए भी, इस तरह की कौम हमारी रही हो जो हमेशा लड़ाई लड़ती रही हो, हम लड़ाई में हारते रहे हैं ? हमारे यहां का सिपाही भी बड़ा मजबूत है और उसने हमेशा हिन्दुस्तान का नाम दुनिया में पैदा किया है, तो क्या कारण है कि हमको मुंह की खानी पड़ी है ? उसको दो चीजें जब जब नहीं मिली हैं तब तक हमारी हार हुई है । जब उसको दो चीजें मिल गई तो उसका कोई मुकाबला नहीं कर सका । उसको अगर माडर्न वैपंज नहीं मिले तब वह हारा और अगर उसका जनरल वार स्ट्रेटेजी में कामयाब नहीं हुआ तब वह फेल होता रहा है । अंग्रेज आये, उन्होंने यहां के आदमी को भरती किया और उसने यहां की फौज की सहायता से दुनिया को फतह किया बर्मा, अफ्रीका या दुनिया के किसी भी हिस्स

[श्री लहरी सिंह]

को उसने यहां की फौज की मदद से फतह किया है । इसका क्या कारण था ? इसका कारण यह था कि उसने माडर्न वैपंज हमारी फौज को दिये । हमारे पास माडर्न वैपंज नहीं हैं और वार स्ट्रेटेजी में भी हम लोग तकरीबन-तकरीबन बिल्कुल सिफर हैं ।

आपने यह पोथा छाप दिया है और इसमें बताया है कि इतनी हमारी वर्कशाप्स काम कर रही हैं, इतनी हमारी फौज है, इतनी हमने अमरीका के सामने हाथ जोड़ कर हथियारी मदद ली है रूस से ली है । लेकिन क्या किसी लेमैन को भी इससे तसल्ली हो सकती है, क्या आम आदमी को इतने से ही तसल्ली हो सकती है ? आपका बोर्डर बहुत लम्बा चौड़ा है, एक तरफ वह चीन से लगता है, दूसरी तरफ पाकिस्तान से । एक तरफ चीन आपका दुश्मन बैठा हुआ है और दूसरी तरफ पाकिस्तान है । चीन के साथ आज जो लड़ाई लड़ी जाएगी वह पानीपत की लड़ाई नहीं होगी । । अंग्रेज ने दो वर्ल्ड वार्ज लड़ी हैं और कामयाबी के साथ लड़ी हैं । आज जिसके पास न्यूक्लियर वैपंज होंगे और उसके साथ साथ एयर फोर्स मजबूत होगी वही दुनिया में कामयाब होगा । हमारे पास न एयर फोर्स मजबूत है और न ही न्यूक्लियर वैपंज हैं तो हम कैसे लड़ाई लड़ सकते हैं । साथ ही साथ हम किसी के साथ एलाएंस नहीं करना चाहते हैं । इस मुल्क की बदकिस्मती है कि न इसके पास माडर्न वैपंज हैं और नहीं यह बना सकता है क्योंकि गरीब मुल्क है और न ही एयर फोर्स है । इस बात पर हम बड़ा फख्र करते हैं कि हम एलाएंस नहीं करेंगे । इसको हम बेइज्जती समझते हैं । हम समझते हैं कि यह हमारी पालिसी के खिलाफ चीज जाती है । जो दलील दी जाती है इसको सुन कर हैरानी होती है । एक तरफ अमरीका और यू० के० हैं और दूसरी तरफ़ चीन और रूस हैं जो कि एयर फोर्स के मामले में बहुत दूर जा चुके हैं । मेरे पास इतना वक्त नहीं है कि मैं आपके सामने डिटेल्ज रख सकूं । सभी इसको जानते हैं कि चीन आज एयर फोर्स के मामले में सब से ज्यादा आगे बढ़ा हुआ है । इतना होने पर भी वह न्यूक्लियर वैपंज भी तैयार कर रहा है, हाइड्रोजन बम भी तैयार कर रहा है । एलानिया वह इस चीज को कहता है । हम कहते हैं कि हम यू० एन० ओ० के पास जायेंगे, वहां इस चीज को रखेंगे । हम रशिया को कहेंगे, अमरीका को कहेंगे, अंग्रेजों को कहेंगे कि तुम हमारे साथ आओ और दुनिया में एक आवाज पैदा करो कि चीन इन न्यूक्लियर वैपंज का इस्तेमाल न करे, हमारे खिलाफ इनका इस्तेमाल न करे । हमारी इस बात को कोई सुनने वाला नहीं है । हमारे प्रधान मंत्री इस हाउस में कहते हैं कि इनको बनाना एक धोखा है, इतना रुपया हमारा जो गरीब मुल्क है, वह इन पर खर्च नहीं कर सकता है, अगर इनको बनाया भी जाये तो बहुत लम्बा अरसा लग जायेगा और उनको बनाने का फायदा भी क्या है ? लेकिन मैं बतलाना चाहता हूं कि अंग्रेजों ने पहली लड़ाई अमरीका और दूसरे मुल्कों को साथी बना कर और एलाएंस करके जीती और जर्मनी को हराया । दूसरी लड़ाई में भी उसने अमरीका के साथ एलाएंस किया, दूसरों के साथ एलाएंस किया और वह कामयाब हुआ । इतनी बड़ी वह हकूमत थी, अगर उसने एलाएंस नहीं किया होता और अकेली हमारी तरह से रही होती तो कभी कामयाब नहीं हो सकती थी । हम हैं कि जिन के पास न आर्म्स हैं, माडर्न वैपंज नहीं हैं, न्यूक्लियर वैपंज नहीं हैं, एयरफोर्स नहीं है फिर भी एलाएंस नहीं करना चाहते हैं । हम टेढ़ी टोपी अपने सिर पर रखते हैं, मूंछों पर ताव देते हैं और कहते हैं कि एलाएंस नहीं करेंगे । न्यूक्लियर वैपंज हम तैयार नहीं करना चाहते हैं क्योंकि हम कहते हैं कि हम गरीब हैं । तब कौनसी बेइज्जती की बात है एलाएंस करने में यह मैं आपसे पूछना चाहता हूं । चीन से बचने

का फिर कौनसा रास्ता है ? ऊपर से आप मिलिट्री एलाएंस न करें और कहते रहें कि हम न्यूट्रल हैं, इससे कोई लाभ नहीं है आपकी न्यूट्रेलिटी की पालिसी भी कुछ नहीं है । लड़ाई होती है तो चुपचाप आप अमरीका के सामने हाथ जोड़ते हैं और उससे मांगते फिरते हैं और दुनिया को कहते हैं कि हम इंडिपेंडेंट हैं, एलाएंस हम नहीं करेंगे।

रशिया आप से सहयोग नहीं करेगा। अन्दर जा कर जितना यह मुल्क खुशामद करता है उतना दुनिया में शायद ही कोई करता हो। कोई भी उतनी खुशामद नहीं कर सकता है। यह हाउस इस बात को सोचे, रूलिंग पार्टी इस बात को सोचे। मेरा ऊंट खो जाए और मैं कहूं कि मेरी टोपी उतार लेना, इससे क्या लाभ ? अगर मुल्क की आजादी चली जाए और चीन की वजह से चली जाए तो फिर आपकी जो न्यूट्रेलिटी की पालिसी है इसका क्या लाभ ? इस पालिसी का मजा मुल्क ने चख लिया है। मुल्क चोट खा चुका है। हिस्ट्री लिखने वाले लिखेंगे कि अंग्रेजों के बाद एक कमजोर हकूमत आई थी जो आक्रमणकारी का कुछ उत्तर नहीं दे सकी, खुद हथियार नहीं बना सकी और न ही अपनी रक्षा करने के लिए उसने कोई एलाएंस किया। मैं चाहता हूं कि इस पर गम्भीरता से गौर किया जाना चाहिये। वह वक्त गया जब हम इंडिपेंडेंटली फाइट कर सकते थे। उधार टूटे फूटे हथियार ले कर हम फाइट नहीं कर सकते हैं। वे हथियार जो आजके ज़माने में खत्म हो चुके हैं, जिनकी कोई युटिलिटी नहीं रही है, उनके बल पर हम लड़ाई आजकल की नहीं लड़ सकते हैं, हम उस में कामयाब नहीं हो सकते हैं। आने वाली तारीख आपको इसके लिए क्षमा नहीं करेगी और कहेगी कि आपने मुल्क की आजादी को धक्का पहुंचाया है।

आज दो ही ग्रुप हैं जिन में से एक के साथ आप मिलिट्री एलाएंस कर सकते हैं। एक कम्युनिस्ट और दूसरा डेमोक्रेटिक। कम्युनिस्टों में चीन और रूस ताकतवर हैं। रूस को आप देख चुके हैं। जब नेफा की लड़ाई हुई थी तो यह कहने लगा कि चीन हमारा भाई है और हिन्दुस्तान हमारा दोस्त। अगर थोड़ी सी गलती से चीन कलकत्ता एयर फील्ड के पास आ जाता, इधर और आगे बढ़ आता तो भी वह यही कहता कि चीन भाई है और हिन्दुस्तान दोस्त। डेमोक्रेटिक कंट्रीज़ अमरीका और इंग्लैंड हैं। जो डेमोक्रेटिक वर्ल्ड है वह एलानिया कहता है कि कम्युनिस्ट गवर्नमैंट टोटैलिटेरियन गवर्नमेंट हम नहीं बनने देंगे और वह डेमोक्रेटिक सैट अप कायम करना चाहता है। हम भी डेमोक्रेटिक सैट अप में हैं। तो क्या वजह है कि हम डेमोक्रेटिक सैट अप के अन्दर उन डेमोक्रेटिक कंट्रीज़ से एलाएंस नहीं करते। यह अन्दाजा लगाना ठीक नहीं है कि रूस हम से बिगड़ जायेगा। रूस बिगड़ जाये या न बिगड़ जाये लेकिन आज छोटे-छोटे मुल्क लड़ रहे हैं। साउथ कोरिया साउथ वियटनाम जैसे मुल्क लड़ रहे हैं लड़ाई, वर्ना चीन उनको हज़म कर जाता। आज टर्की बचा हुआ है, आज और मुल्क बचे हुए हैं, लेकिन अजीब आप की नालेज है, अजीब आप का दिमाग है कि आप कहते तो हैं कि लड़ो बहादुरो। लड़ेंगे कैसे यह मेरी समझ में नहीं आता। जब आप के पास न्यूक्लियर वेपन्स नहीं, हाईड्रोजन वेपन्स नहीं, एअर फोर्स आप को तैयार नहीं और न तैयार हो सकती है, तो आप चीन का मुकाबला कैसे कर सकते हैं। डिमोक्रेटिक सेटअप के रहते हुए हम क्यों नहीं ओपनली यू०के० और यू०एस०ए० से अलायंस करते कि तुम हमारी मदद करो, हमें आर्म्स दो, हमें ट्रेनिंग दो, हम और तुम एक हैं। अगर यह नहीं किया गया तो आने वाली नस्लें बतलायेंगी कि हिन्दुस्तान का ड्रामा क्या होगा। अगर कोई हमला हुआ तो हिस्ट्री का एक डार्क पीरियड लिखा जायेगा।

[श्री लहरी सिंह]

चीन इस तरह की तैयारी कर रहा है कि वह यह नहीं चाहता है कि और किसी मुल्क पर हमला करे। वह चाहता है कि यहां की गवर्नमेंट को फेल कर दे और यहां पर कम्यूनिस्टों को बिठा कर अपनी पालिसी चलाये। और वह कामयाब नहीं हो सकता जब तक वह यहां को गवर्नमेंट को रिप्लेस कर के, या फतेह कर के या झगड़ा कर के हटा न दे। यहां वह राज नहीं करना चाहता। चीन वाले दिल्ली में क्या बैठेंगे। वह यह चाहते हैं कि हमें इतना डिस्टर्ब करें, इतना हिलायें कि इस गवर्नमेंट की फाइनेन्शल पोजीशन कमजोर हो जाये और उस के लिये जिन्दा रहना मुश्किल हो जाये ताकि यहां कम्यूनिस्ट पार्टी गद्दी सम्भाले और वह हमारे साथ अपनी पालीसि पर चले। उस का मकसद यह नहीं है कि यहां पर हकूमत करे, उस का मकसद है एशिया के अन्दर कम्यूनिज्म आ जाये ताकि वह अपनी पालिसी डिक्टेट कर सके और वहां पर उस की सुप्रिमेसी हो। लेकिन वह जानता है कि जब तक हिन्दुस्तान को फतेह नहीं करेगा वह हिन्दुस्तान में कम्यूनिस्ट गवर्नमेंट नहीं ला सकेगा। जब तक इस मुल्क के अन्दर जो कि एशिया में सब से बड़ा मुल्क है, कम्यूनिज्म नहीं आयेगा तब तक एशिया के अन्दर कम्यूनिज्म नहीं आ सकता यह चीन को अच्छी तरह मालूम है, और चीन को छोड़ दुनिया को मालूम है। इस लिये आज चीन की मुकम्मल तैयारी है। उस को ज्यादा से ज्यादा तैयारी इस बात की करनी है कि वह इस गवर्नमेंट को फेल करे।

उसने एक मोर्चा लड़ा था नेफा के अन्दर जिससे आज तक हमारी फाइनेन्शल पोजीशन कमजोर है, आज तक भाग दौड़ हो रही है और हथियार भी लाये जा रहे हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि वह ऐसे हथियार नहीं हैं जिन हाइड्रोजन बम या नाइट्रोजन वेपन्स पर ही आप यकीन कर लें। आज मैं यह इसलिये नहीं कह रहा हूं कि मैं अपोजीशन की तरफ से बोल रहा हूं। मेरे अन्दर इतना ज्यादा दर्द है इस मामले में कि मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं चाहता हूं कि गवर्नमेंट इस बात पर खास ध्यान दे और अपनी फौजों का हौसला बढ़ाये। अगर वह ऐसा करे तो हमारे पास न्यूक्लिअर वेपन्स भी होंगे हमारे पास एअर फोर्स भी होगी। हमारी एअर फोर्स के पाइलट्स कम नहीं हैं, यहां के पाइलट्स बहुत मजबूत हैं। लेकिन अकेला बेचारा पाइलट क्या करे जबकि हमारे पास हवाई जहाज न हो, राडार न हो, कोई दूसरी चीज न हो। उसको इनका तजुर्बा कितना है। यह बातें उसे पता नहीं हैं।

हमारे आदमी बड़े बहादुर हैं। हमारे पंडित जी बेचारे चले गये। वह कहते थे कि चीन को निकाल दो, तुम बड़े बहादुर हो। लेकिन इस हाउस के अन्दर यह बदकिस्मती रही है कि रूलिंग पार्टी की तरफ से लीडर हमेशा यकीन दिलाते रहे और अपोजीशन वालों का मजाक उड़ाते रहे कि तुम हमारी पालिसी को नहीं समझते, हमेशा इस बात की नुक्ताचीनी करते हो और यह कहते हो कि शायद हम तैयार नहीं हैं। नहीं, नहीं, हम बड़े मजबूत हैं, हम बड़े बहादुर हैं। अब भी कहते हैं कि हम बड़े बहादुर हैं। कौन बेवकूफ इस बात पर यकीन कर सकता है। एक ले मैन भी जानता है कि आप की तैयारी के माने क्या हैं। आज माडर्न वैपन्स की लड़ाई है। आपके पास काफी जहाज नहीं। आज जो हालात पैदा हैं उनमें आप इन वैपन्स पर यकीन नहीं कर सकते। आप की फौजों में आज हौसला नहीं है। वह कहते हैं कि लड़ेंगे तो लेकिन देखा जायेगा फिर क्या होता है।

दूसरी बात इस सिलसिले में मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर हमारे पास कुछ थोड़ से हथियार भी हो जाते हैं तो यहां पर गवर्नमेंट को शौक है कि उनको खूब पब्लिसिटी दी जाये। रेडियो पर भी आता है, यहां पर इस हाउस में भी बतलाया जाता है, फारनर्स को भी लाकर दिखलाया जाता है कि यह

हमारे हथियार हैं । चीन के जनरल को बुला कर लड़ाई के पहले दिखलाया गया कि हमारी तोपें कैसे चलती हैं । क्या यह कोई दिखलाने की बात है । वह तुम्हारी एक एक बात को देख कर गये । तुम ने एक एक इंच अपने मोर्चे को और अपने वैपन्स को उनको दिखाया । एक भी कोई थोड़ा सा हथियार निकल गया तो डिफेन्स मिनिस्टर साहब खुश हो गये ।

तीसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि आपका प्रमोशन का सिस्टम डिफैक्टिव है । मैं चाहता हूं कि देश भर में जो हैल्दी स्टूडेंट हो और यूनिवर्सिटी में फर्स्ट या सेकेण्ड आता हो, जो साइंसदां हो, उसको फार दि टाइम बींग कम्पलसरीली आर्मी में लिया जाये । हमारी मिलीटरी को दिमाग की बड़ी जरूरत है । आप की आर्मी स्ट्रेटजी की वजह से फेल होती है । हमारी डिफीट नेफा में इसलिये नहीं हुई कि चीन के पास फौज हम से ज्यादा थी । हम हारे इसलिये कि हमारा मोर्चा ठीक से जमा नहीं । हमने आवाज दी कि पठानिया साहब वहां से यहां आ गये और उधर से कौल साहब अस्पताल चले गये । मिलीटरी स्ट्रेटजी कोई आसान बात नहीं है । हमें बैस्ट ब्रेन्स कंट्री के लिये चाहिये । यह मत समझो कि जिसके मसल्स थोड़े डेवेलप हो गये वही तगड़ा आदमी है । मैं इस चीज में डिफर करता हूं । इसलिये जो बैस्ट ब्रेन्स यूनिवर्सिटी से निकलें उन लड़कों को स्पेशल प्रिफरेंस देकर मिलीटरी में लेना चाहिये । इस तरह के लोगों के लिये 40 परसेन्ट या 35 परसेन्ट जगह कर दो और डाइरेक्टली ले लो ताकि व सारी चीजों को पढ़ें पढ़ायें और नक्शे तैयार करें । हालात बतलायें और मौका देखें । आज तो यह होता है कि जो बी० ए० पास डाइरेक्ट आ जाते हैं, अंग्रेजी अच्छी बोलते हैं, आप टु डेट होते हैं उन को ले लिया जाता है । यह बात मझे नहीं जंचती । । दिमाग दूसरी चीज होती है जो स्ट्रेटजी को समझे । इसके लिये हमें बैस्ट ब्रेन्स लेने होंगे । जर्मनी में लड़ाई के दिनों में रोमेल निकला । उसने थोड़ी सी फौज से नचा दिया सब को । अंग्रेज मोटे दिमाग के थे उसके मुकाबले में भले ही बड़े लम्बे चौड़े थे । अगर हमारे मुल्क को चीन का मुकाबला करना है तो जो बस्ट ब्रेन्स हों, जो इंटेलिजेंट हों, जो फिजिकली फिट हों उन्हें लिया जाना चाहिये । लेकिन यहां रिक्रूटमेंट के अन्दर क्या होता है । तजुर्बा किया जाता है । तजुर्बा कैसा कि जो कौमें लड़ती नहीं हैं, ज्यादातर उन्हीं में से भरती कर लिया जाता है । तुम जरूर तजुर्बा कर लेना, लेकिन इसके लिये बाद में वक्त आयेगा । तुम बाकी सर्विसेज के अन्दर भरती का तजुर्बा कर लो । लेकिन उन कौमों के तगड़े लड़कों को आना चाहिये जो लड़ती हैं, रफ लाइफ लीड करती हैं । 60 परसेन्ट या 55 परसेन्ट ऐसे लोगों को आर्मी के अन्दर लिया जाना चाहिये । आज तो यह होता है कि एक आर्मी का लेफ्ट नेन्ट मर गया तो छः दूसरे ग्रेजुएट छांट लिये गये । का ग्रजुएट्स तोप चलाया करते थे पहले । क्या उसकी बैक ग्राउण्ड ऐसी हो सकती है कि वह बन्दूक सम्भाले । अगर 100 लेफ्ट नेन्ट जनरल मर जाते हैं तो उन को रिप्लेस करने के लिये अगर 56 परसेन्ट बाहरी लोग भरती हो पायेंगे तो उनकी तरक्की हो जायेगी। रिक्रूटमेंट का यह तरीका गलत है ।

वेलफेअर के मामले में यहां बहुत कुछ कहा जाता है कि फौजियों को रिसेटल किया जायेगा और मदद भी दी जायेगी । मुझे यह मालूम है कि डिस्ट्रिक्ट्स में ऐसे लोगों की क्या इज्जत होती है । मैं कहता हूं कि अंग्रेज लोग उन की जो इज्जत किया करते थे अब उसका दसवां हिस्सा भी इज्जत नहीं होती है । अंग्रेज लोग उनको आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया करते थे, सब रजिस्ट्रार बनाया करते थे, बड़े बड़े ओहदे देते थे । लेकिन अब क्या होता है कि साबन की टिकिया पकड़ा दी, बहुतों को मशीन दे दी या दस रुपये दे दिये । फिर कहते हैं कि हमने फौजियों को रिसेटल कर दिया । आज फौजी डिस्ग्रंटल्ड हैं, वह खुश नहीं हैं ।

[श्री लहरी सिंह]

आखीर में मैं कहना चाहता हूं कि मेरी बातों को नुक्ता चीनी न समझो। मेरे दिल में जलन है, आवाज है, जिस पर तुम को गौर करना चाहिये।

Mr. Deputy-Speaker: Hon. Members may now move the cut motions to Demands for Grants relating to the Ministry of Defence, subject to their being otherwise admissible.

Shri Yashpal Singh: I beg to move:

(i) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100."

[Failure to publish the Report of Lt. Gen. Henderson on the debacle of Indian Army in NEFA (1)].

(ii) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100."

[Failuse in defending the frontiers against aggression of China and Pakistan (2)].

(iii) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100."

[Failure to equip the Indian Army and Air Force with supersonics and nuclear weapons (3)].

(iv) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100."

[Failure to strengthen the Indian Navy (4)].

(v) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100."

[Failure in ameliorating the service conditions of Jawans and other ranks (5)].

(vi) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced Rs. 100."

[Proposed retrenchment of workers of Ordnance factories (6)].

Shri Narendra Singh Mahida: I beg to move:

(i) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100".

[Need to reorganise the Army thoroughly in the light of modern trends and the experience of Chinese aggression (17)].

(ii) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100".

[Need to raise the discipline and moral of officers and other ranks in the Defence Forces (18)].

(iii) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100".

[Need to accelerate the re-equiping of the Defence Forces in various directions (19)].

(iv) "That the demand under the head 'Ministry of Defence' be reduced by Rs. 100".

[Need to recast the rules, regulations and procedures as regards administrative, financial and audit control (20)]

(v) "That the demand under the head 'Defence Services, Effective-Army' be reduced by Rs. 100".

[Need to render the Armoured Corps more effective by eliminating multiplicity of types of tanks (21)].

(vi) "That the demand under the head 'Defence Service, Effective-Air Force' be reduced by Rs. 100".

[Need to render the Air Force more effective by eliminating multiplicity of Aircraft (30)].

Mr. Deputy-Speaker: these cut motions are now before the House.

18 hrs.

Shri Joachim Alva (Kanara): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I would like to congratulate the hon. Defence Minister for presenting a very balanced and interesting document for 1965-66. The Defence Services need to be congratulated for having been on their duty in far-flung areas on the NEFA front, on snow-white Ladakh front and other places where the people down from Kanya Kumari can never imagine with what difficulties they are performing their duty away from their homes, away from all signs of civilisation on small rations and in bitter cold. We can never realise what they are doing and we all owe a great debt to all the Defence Services, specially the Indian Air Force—not just the Army—for the duty they have performed. Qualitatively and quantitatively, the Indian Air Force have performed the highest rate of sacrifice. The Defence Minister and the Minister for Defence Production as also the Deputy Minister, have along with the Chiefs of Staff contributed a lot along with all the men down from the jawans right upto the top, towards the safety and security of our land in the past year. I am particularly happy that the hon. Deputy Defence Minister, who was associated with the Indian National Army and had been jailed for one year for, being a medical man, performing medical duties and for perhaps having shown a great sympathy as a patriot, is now associated with the Defence Ministry.

For an I.N.A. man it has taken twenty long years to be associated with the ministerial wing of the Defence Services, for one who had fought for the freedom. The I.N.A. was one of the five factors which contributed towards the Indian struggle for freedom. All the three wings all the three Ministers have done well. The Defence Ministry is headed by a valiant man who said that he will not return home until he was able to meet the Chinese attack.

Are we in for another attack from China? That is the question perhaps on everybody's mouth and in everybody's mind. And that is a very serious question. We cannot overlook this danger. We are still facing a massive danger and during the time of emergence we are still perhaps not paying the serious attention that this deserves to be paid. South-East Asia is like a necklace and each diamond is gathered together in a necklace by an invisible string. I have heard a most interesting story from Ramayana. When Sri Lakshman was turned into a bird, there was a dialogue between Sri Ram and Sri Lakshman. He said, "You are like a necklace and each diamond is gathered up in the necklace by an invisible string." That invisible string has now been destroyed across the whole of South-East Asia. All the diamonds have fallen down in the dust from Burma upto Canberra. The necklace has to be gathered up. We have not got the courage to put that invisible string and make the necklace that it was until the Chinese attacked. The line of protection has been withered away from Burma to Canberra right upto Nepal, Bhutan, Kashmir, NEFA border and Sikkim and all the places are in danger. Right now Sikkim is frightened. And on this side, the UAR, Afghanistan and Iran are in different positions in regard to us. We have been attacked by China. What should we do? It is time that we became self-reliant. We can never have a nuclear umbrella. We had the Nehru umbrella, a powerful policy of non-alignment, when powerful ideas generated behind his great personality. They have perhaps been kept in the cold storage for the present. We have to revive it and invigorate it under our leadership and that leadership should also be well supported by the Defence forces.

Sir, there is a wonderful film produced by the British after Churchill's death entitled the Finest Hours. That film on Churchill should be shown to every school boy and girl in India in-

[Shri Joachim Alva]

cluding the men in the Defence forces. One of the great things Mr. Churchill says there is, "We the British have many defects but we have no fear." That is exactly the point we have to instil into our minds, the point that the Defence Minister emphasized when he took office. Unless we shed our fear, we cannot defend our country. Unless we have the requisite weapons, we cannot arm ourselves against the Chinese attack. The Chinese want to humiliate us. Those who want to think of a nuclear bomb, let them forget it because a nuclear weapon cannot bring us protection.

This country has been invaded not once but perhaps a hundred times, but it has never been destroyed. But the day we arm ourselves with a nuclear weapon, our country will be destroyed. and our ancient land of Hindustan will be destroyed. We as a people and as a great nation with a soul of the past and with a peep into the future have never been destroyed, though we have been invaded times without number but the day we take to a nuclear weapon, we shall be destroyed.

China is perhaps interested in humiliating us because we are prosperous rich and contented. But China cannot create a desert around itself. China cannot be prosperous with a huge desert all around it by throwing the atom bomb. So, in the interests of China itself, the nuclear bomb may not be a real weapon to be used, against India; it may be only a weapon of threat; if it cannot use the bomb on the Gobi desert, if it cannot use the bomb across Mongolia or on the Russian territory around, it cannot also use it on India. Knowing this, we should not spend enormous sums of money on a nuclear weapon. America's defence expenditure is more than the expenditure on all our three development plans so far. So, how can we ever think of the nuclear bomb? It is time that we gave up this idea of a nuclear bomb. Those who have never felt perhaps even one wound of the freedom struggle between 1857 and 1947 are today thinking of the bomb. The bones of those persons who had suffered wounds and lost their lives in the freedom struggle are still lying in the tombs and crying. And we do not even know the names of all those who fought for freedom heroically, with weapons or without weapons. whether with violent means or with non-violent means. But those who have never suffered any wound in that long struggle are thinking today of the nuclear bomb in some way or the other.

But I was most astonished when I went last week to attend a lecture by Shri H. M. Patel, a former Secretary of the Defence Ministry. I spent an hour there which I thought was not worth it, and I am not saying anything except what has appeared in the newspapers, namely that retired civil servants are advocating the cause of the nuclear bomb. They do not say it in so many words, but that is what they mean. The lecture was presided over by a former Governor of the Reserve Bank, Shri Rama Rau once our Ambassador to U.S.A. and Japan. They had lived for nearly 30 years in opulence and great comfort and during their service they had implicitly obeyed their British masters. But now, suddenly, Shri H. M. Patel, says in his lecture, as was reported in The Times of India, and as I have heard it myself last week after spending one hour in Bombay, that we had bought over 40 varieties of aircraft, and, therefore, he asks why should we produce aircraft ourselves! This was the question which he posed to the public of India: Why should we manufacture our own aircraft? This is what an ex-secretary of the Defence Ministry says. He said at one time that we were going for more than 40 varieties or even 400 varieties—I forget the exact figure; Then, in another breath, he asked why we should not go in for the nuclear bomb.

All these retired servants, who had lived in comfort, and who were worried over even a slight crease in their pants, who had cocktail parties, and who set their lives from ten o'clock in the morning to five o'clock in the evening in a methodical way and who, whenever we used to ring them up used to say that they were busy, are today telling us how our freedom should be defended. They are the people who are really saying that we should burn up our planes. I would submit that the people of India cannot afford this kind of thinking. We want to have an Air Force with aircraft whose components will be mostly manufactured by ourselves. Thanks to the Defence Minister and the Ministry's supervision, the Hindustan Aircraft has all along produced excellent aircraft, and they have given an excellent account of themselves; they have proved a five hundred per cent success in the public sector. I would suggest that we should have more factories like the Hindustan Aircraft in our country. If the Hindustan Aircraft factory has been able to set an example by its devotion to duty and by its capacity to manufacture new types of aircraft, then it should be taken note of, and its activities should be further and further expanded util we are able to produce a perfect fighter and bomber of our own. Why should we not think like that? And why should we not be self-reliant. For, it is only when we are self-reliant that other nations will respect us. We are already appearing to be beggars because of the PL-480 food imports. Let us not be beggars again for the nuclear weapons and for more weapons from abroad, and for more bombs from abroad. Our 24 ordnance factories can be live bombs of protection and security for us. There should be moving machines. Their outmoded machinery must be discarded. And we should be able to manufacture the most up-to-date equipment and forms of clothing in those factories, which will enable our jawans to stand up to the cold climate at the high altitudes on snow-white and snow-clad sights as they are. We should manufacture the most up-to-date clothing for them in order to give protection to those people. Incidentally, I would like to pay a tribute to our people who are doing work there on the border roads. Friends like Shri Ravindra Varma who is now present here and myself had been to those areas like NEFA and Ladakh, and we were led to NEFA by gallant Shri Mahavir Tyagi. All those workers there are doing a magnificent job. Perhaps, their names are not known to anyone. I would plead on the floor of the House that the salaries of those drivers should be three times what it is now. They should also be allowed to take a little rum in the bitter cold nights and meat also once or twice a week. I would give them anything that they want, because they are doing their duty magnificently there in those difficult terrains.

Shri Ravindra Varma (Thiruvella): Medical aid also.

Shri Joachim Alva: Yes, they should get proper medical aid facilities also. In those cold heights, they need rum to keep themselves warm to face the climate and also some meat. Let us give to those people all that they want. But in the name of expenditure on defence, let us spend the money in a responsible way and see that every rupee and every pie that we spend on our Army and on our Defence Forces does not go down the drain and there is no corruption and there is no wastage of any kind.

This Parliament, the people of India sanctioned and gave an amount of money to the public exchequer for the defence forces, for the protection of our jawans, the men in the Army, Navy and Air Force, and also for keeping our machines going, our security apparatus working. The Air Force has to be the 'queen' of our battlefield, just as the Russians said that the infantry was the 'queen' of their battlefield in the last war.

[Shri Joachim Alva]

There is a foreign correspondent here now in Delhi whose name is Rawle Knox. I have met him. I have been very familiar with his writings in 1950-53 in the *Observer*. His words are ringing in my ears. This is what he wrote in the London *Observer* in early 1950s— the Chinese Army is well-fed, well-disciplined, well-looked after; it is not worrying the people in the countryside; it is popular and courageous. I am not singing praise of that Army, but I mention that this is written by an Englishmen who is now in the city reporting for the London *Daily Telegraph*. I asked him again whether what he wrote then is still true. He fully confirmed it.

What about the Soviet Army? The Soviet Army is very popular in Russia. I would like to quote a sentence to you, but there is no time for it. The Soviet Army also is well-disciplined, well fed and well-equipped. Our hon. Defence Minister has been there, all over the world, to all these three countries, USA, UK and USSR.

Now, our Army also should be likewise. Once upon a time, it was the pride of the British to drive it against Rommel, one of the greatest commanders of history. Today we are a little downcast after defeat at Chinese hands. We should not only place all the weapons they need at their disposal, but we should also see to it that our Army is kept above all want, munitions, clothing, personnel, everything. Look at the way Chinese girls are playing their part in the Chinese Liberation Army. I would like to implore the defence Minister to see that we have a well-lined, disciplined programme for our women. Unless we bring our women into this, we cannot defend our country with all our might and main. Our women should be brought out actively into this life of defence in the shape of nursing and self protection. They should undergo for three months a course in self-defence. As long as these women have not been taught these courses in nursing and self-defence, we shall not move our defence forces in lines of Safety.

We have got to go down to poor Kerala. The women of Kerala can be found as far as Assam and in the NEFA heights; The Kerala women are doing nursing in all the hospitals of India. We want more nurses. We want a thousand nurses, we want a thousand doctors.

What happens to the poor young men? If they get 45 per cent marks and are in urgent need of becoming doctors but are disqualified. Why should not the Army take these men and train them as doctors not because they are cast-aways but because these men are anxious to become doctors? The Army can forget the rules and regulations and take them in and train them up. The authorities will have to give them a 25 per cent allowance on their salaries for loss of practice, as they now want to give to the civilian doctors under the Compulsory health scheme.

These are all amenities which we have to give, pay, privileges and other things. Take the jet pilots of the Soviet Air Force. They are heroes of the Soviet Union. There was a pilot who took me to Farnborough. The India Office told me that he was one of our ace pilots. I am ashamed to have forgotten his name; but I have not forgotten him. I asked him 'What is your age?' He said '33'. I asked 'Married?'. He answered, 'No, how can I marry? What will happen to my wife? She has to be a professional woman, a nurse or doctor if I crash!

These are the worries of our fighting men. We should not burden them with these worries when they go high up in the air, locked up in battle with the enemy. When he is engaged in such operations at those heights, he cannot be worrying about his nearest

and dearest ones. Unless we assert that the Defence Ministry sees to it that our jet pilots ace pilots, and others who are doing battle on those heights are kept free from any such worries, we can have no security. We cannot keep them worried all their lives about their children.....

Mr. Deputy-Speaker: He should conclude now.

Shri Joachim Alva: I want some more time. I will continue tomorrow. Thank you.

Mr. Deputy-Speaker: He has already taken 15 minutes. He can take two more.

Shri Joachim Alva: The House is thin. We are in an emergency. Everyone is not present. There is not even quorum. I will continue tomorrow.

Mr. Deputy-Speaker: The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

18.13 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the clock on Tuesday, March 30, 1965/Chaitra 9, 1887 (Saka).

GMGIPND—LSII—2640 (Ai) LS—28-4-65—970.